नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो. : 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ..... दिनांक : 27.05.2016

प्रकाशनार्थ

योगीराज बाबा गम्भीरनाथ स्मृति साप्ताहिक कार्यशाला का समारोप

महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल–धूषड़ गोरखपुर में बी0एड0 विभाग द्वारा आयोजित **योगीराज बाबा गम्भीरनाथ सप्त दिवसीय कार्यशाला** के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए पूर्व कुलपति **प्रो. यू.पी.सिंह** ने कहा कि योगीराज बाबा गम्भीरनाथ भारतीय ऋषि परम्परा के ऐसे सन्त थे जिनमें सृष्टि के लय–प्रलय की क्षमता थी। वे महायोगी गुरू श्री गोरखनाथ की योग परम्परा के एक सशक्त वाहक थे। उनकी स्मृतियॉ भारत में योग परम्परा एवं भारतीय संस्कृति को जीवन्त बनाएगी। उनकी स्मृति में शिक्षक–शिक्षार्थियों की यह कार्यशाला शिक्षकों को निश्चित एक रचनात्मक दिशा देगी। उन्होनें आगे कहा कि कोई भी राष्ट्र वैसा ही बनता है जैसा उस राष्ट्र का शिक्षक उसे बनाना चाहता हैं शिक्षक व्यक्ति निर्माता है, समाज निर्माता है तथा राष्ट्र निर्माता है। भारत के समक्ष आज बड़ी चुनौती है कि उसकी कक्षाओं में ऐसा शिक्षक नही पहुँच पा रहा है। भारत को शिक्षक निर्माण की मौलिक प्रक्रिया की पुनर्स्थापना करनी होगी। जगद्गुरू भारत योग्य गुरू के बल पर ही बनेगा। आर्थिक समृद्धि से ताकतवर हुआ जा सकता है किन्तु मानवता का विकास तभी होगा जब आर्थिक समृद्धि के साथ सांस्कृतिक तत्वों का युगानुकुल सृजन करें। शिक्षा वहाँ है जहाँ हर शिक्षक विद्यार्थी हो और हर विद्यार्थी शिक्षक हो। शिक्षक होने की प्रक्रिया अध्ययन–मनन, आचरण में उतरने के साथ बाटने के साथ पुर्ण होती है। बी0एड0 पाठ्यक्रम की पढ़ाई में तो शिक्षक और छात्रों की दुनियाँ और एकात्म हो जाती है। शिक्षक–शिक्षा का अध्ययन–अध्यापन भारत को योग्य शिक्षक देने के उद्देश्य से किया जाय।

समापन समारोह में 'द्विवर्षीय बी0एड0 पाठ्यक्रम एक समीक्षा' विषय पर प्रतिभागियों को प्रशिक्षित करते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय शिक्षाशास्त्र विभाग के पूर्व संकायाध्यक्ष एवं अध्यक्ष **प्रो0 लालजी त्रिपाठी** ने कहा कि विद्यार्थियों के पाठ्यक्रमों का भारतीयकरण होना चाहिए। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के बी0एड0 के पाठ्यक्रम के भारतीयकरण का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। अगले सत्र से बदला पाठ्यक्रम लागू हो जाएगा। पाठ्यक्रम एक आधार बिन्दु है। वास्तविक अध्ययन–अध्यापन वही है जो पाठ्यक्रम के आधार बिन्दुओं के माध्यम से उसके विशाल सागर में शिक्षक–विद्यार्थी गोते लगाने लगे। शिक्षा की यही विधि पाठ्यक्रम को फलित करती है। पाठ्यक्रम सदैव अद्यतन होते रहना चाहिए। पाठ्यक्रम युगानुकुल होना चाहिए। राष्ट्र और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप होना

चाहिए। आज हम अपनी मौलिकता खोते जा रहे है। भारतीय मनोविज्ञान योग के गर्भ से निकलता है। भारतीय मनोविज्ञान का मूल योग है। जहॉ तक के इतिहास का प्रश्न है उसके पुनर्लेखन की आवश्यकता है क्योंकि भारतीय इतिहास चाहे देश का हो या 'शिक्षा' का व विदेशी दृष्टि से लिख गया है। शिक्षा प्रबन्धन पर भी ब्रिटिश शासन की छाया है इस पाठ्यक्रम पर भी पुनर्विचार आश्यक है। शिक्षा का प्रबन्धन गुरूकुलों से समझना और सीखना होगा। भारत की पूरी शिक्षा व्यवस्था को भारतीय ढॉचे में ढालने की जरूरत है। इसकी शुरूआत विश्वविद्यालय का बी0एड0 विभाग करने जा रहा है।

कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में बोलते हुए पूर्व प्राचार्य एवं शिक्षाशास्त्री **डॉ0 मयाशंकर सिंह** ने कहा कि शिक्षा का केन्द्र बिन्दु शिक्षक है। मूल्य, सांस्कृतिक तत्व, व्यवहार उसका विषय ज्ञान और समाज–राष्ट्र के प्रति समर्पण की शिक्षक का आभूषण है। शिक्षक को अपने विषय का अद्यतन ज्ञान होना चाहिए। उसका स्व का चिन्तन होना चाहिए। उसे अच्छा समीक्षक होना चाहिए । ऐसा शिक्षक ही विषय ज्ञान के साथ–साथ विद्यार्थियों का युगानुकूल मनुष्य बनाता है।

सप्तदिवसीय कार्यशाला की उपलब्धियों का विवेचन प्राचार्य डॉ0 प्रदीप राव द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्राचार्य ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान किया। कार्यशाला में सभी शिक्षक–शिक्षार्थियों ने अपना–अपना अनुभव शेयर किया।

(प्रकाश प्रियदर्शी)
सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी